चोरी और लापता वस्तुओं को पुनः प्राप्ति

मोनिका कोचर

१) चोरी के प्रश्न में केन्द्रों का अर्थ :-

लग्न से - प्रश्नकर्त्ता या जिसके घर चोरी हुई

4H - चोरी गई वस्तु का स्थान

10H - पुलिस

इसके अतिरिक्त चोरी के प्रश्न में 2H तथा 8H भी देखते हैं।

2H - प्रश्नकर्त्ता का धन

8H - चोर का धन (प्रश्न तंत्र)

२) प्रश्न का विषय या प्रारूप :-

a) चोर घर का या बाहर का

b) चोरी गए सामान की प्राप्ति या अप्राप्ति के योग

c) चोर के मिलने या न मिलने के योग

d) सामान चोरी हुआ या खो गया है या गलत स्थान पर रखा गया है?

A) वस्तु के गलत स्थान पर रखे जाने के योग :-

i) यदि चतुर्थेश लग्न में हो या चतुर्थेश से दृष्ट चं० लग्न में हो तो वस्तु चोरी नहीं होती बल्कि अपने संभावित स्थान पर होती है। (प्रश्न तंत्र)

ii) यदि लग्नेश और सप्तमेश के बीच परिवर्तन हो या दोनों के बीच इत्थशाल हो तो खोई वस्तु अपनी संभावित जगह पर ही होती है, उसकी चोरी नहीं होती। (प्रश्न तंत्र)

iii) प्रश्नकुण्डली में, यदि एक ग्रह अपने नवांश में स्थित होकर लग्न को देखता हो, तब वस्तु चोरी नहीं होती, बल्कि केवल दूसरे स्थान पर रखी गई है। (प्रश्न मार्ग)

iv) यदि स्थिर लग्न तथा स्थिर नवांश हो या लग्न में वर्गोत्तम नवांश हो तो वस्तु चोरी नहीं हुई है बल्कि अपनी संभावित जगह से अलग जगह पर रखी गई है।

वस्तु चोरी होने के योग / चोरी का प्रश्न

B) चोरी का समय :-

प्रश्न के समय उदित लग्न की राशि यदि दिवाबली राशि हो तो चोरी के दिन के समय हुई और यदि रात्रिबली राशि हो तो चोरी रात के समय हुई। (प्रश्न ज्ञान)

यदि मीन लग्न उदय हो तो चोरी संधि काल में यानि सूर्योदय या सूर्योस्त के समय जिसे दिन-रात का संधि काल कहते हैं।

दिवाबली राशियाँ - 1, 2, 3, 4, 9, 10

रात्रिबली राशियाँ - 5, 6, 7, 8, 11

सर्वकालबली राशियाँ - 12

C) चोरी गई वस्तु की प्रकृति :-

लग्न के नवांश से चोरी हुई वस्तु की पहचान होती है। (प्रश्न मार्ग व दैवज्ञ वल्लभ)

D) चोरी गई वस्तु का स्थान एवं दिशा :-

प्रश्न लग्न की राशि से चोरी गई वस्तु का स्थान व दिशा का निर्णय करना चाहिए। (प्रश्न मार्ग)

E) चोर का स्वरूप, आयु एवं जाति :-

लग्न के द्रेष्कोण से चोर का स्वरूप तथा लग्नेश से चोर की आयु एवं जाति का निर्णय करना चाहिए। (प्रश्न मार्ग)

प्रश्न मार्ग - लग्न के नवांश से द्रव्य, द्रेष्कोण से चोर, राशि से समय, दिशा एवं स्थान तथा लग्नेश से चोर की आयु एवं जाति का निर्णय करना चाहिए।

आर्य सप्तति व माधवीयम् मत - लग्नेश के स्वरूप और जाति के समान चोर का रूप-रंग और जाति कहनी चाहिए। आचार्य माधव के अनुसार

षष्ठ भाव चोर है अतः षष्ठेश के अनुसार तथा उस भाव में स्थित ग्रहों से चोर की आकृति, जाति और नाम आदि बतलाना चाहिए।

दैवज्ञ वल्लभा - लग्न के नवांश से चोरी गई वस्तु की पहचान, द्रेष्काण से चोर का स्वरूप, लग्न की राशि से दिशा, देश एवं काल (समय) का विचार तथा लग्न के नवांश से चोर की जाति और अवस्था का विचार होता है।

F) चोरी गई वस्तु कहाँ पर है :-

1) यदि लग्न में स्थिर राशि, स्थिर राशि का नवांश या वर्गोत्तम नवांश हो तो चुराई गई वस्तु वहीं होती है या उसी स्थान पर गुम रहती है। और यदि चर लग्न एवं चर नवांश हो तब नष्ट वस्तु घटना स्थल से दूर चली जाती है। (षटपंचाशिका दैवज्ञ वल्लभा)

2) द्विस्वभाव लग्न होने पर चोरी गई वस्तु घर के बाहर परन्तु आस-पास ही रहती है या घर के बाहर जमीन में छुपा दी जाती है।

3) यदि प्रश्न लग्न में प्रथम द्रेष्काण हो तो खोई वस्तु घर के द्वार के पास, मध्य द्रेष्काण होने पर घर के मध्य भाग में और अंतिम द्रेष्काण होने पर नष्ट वस्तु घर के पिछले या अंतिम हिस्से में होती है। (षटपंचाशिका)

4) प्रश्न लग्न के प्रथम द्रेष्काण होने पर धन चोरी गया, द्वितीय द्रेष्काण में धन कहीं गिर गया एवं तृतीय द्रेष्काण में रख कर भुला दिया ऐसा कहना चाहिए। और यदि तीसरे द्रेष्काण में चोरी हो गयी हो तो भी धन घर के अन्दर ही बतलाना चाहिए। (दैवज्ञ वल्लभा)

5) केन्द्र में स्थित ग्रह की दिशा के अनुसार नष्ट वस्तु को दिशा जानना चाहिए। यदि केन्द्र में एक से अधिक ग्रह हो तो उनमें जो ग्रह बलवान हो उस ग्रह की दिशा में नष्ट वस्तु है, ऐसा समझना चाहिए। यदि चारों केन्द्र रिक्त हो या केन्द्रों में स्थित सभी ग्रह निर्बल हो तब लग्न की राशि की दिशा के अनुसार नष्ट वस्तु का विचार करना चाहिए।

नष्ट वस्तु की दूरी ज्ञात करने के लिए लग्न के नवांश का उपयोग करते हैं। लग्न के 5 नवांश तक (16^0 40') खोई वस्तु बहुत ही निकट होती है। 5वें नवांश से आगे जितने नवांश बीत चुके हों उतने ही योज दूर खोई वस्तु होती है। (यहाँ 1 नवांश = 1 योजन = 12 किमी माना जाएगा। यानि अगर 6ठवां नवांश होगा = 12 किमी 7वाँ नवांश होगा = 24 किमी.....) (षटपंचाशिका, दैवज्ञ वल्लभा)

6) नष्ट वस्तु या चुराई गई वस्तु किस स्थान पर रखी गई है, यह विचार 4 भाव की राशि के कारकत्व के अनुसार करना चाहिए। यदि 4 भाव की राशि पृथ्वी तत्त्व की है तो वस्तु का स्थान भूमि पर होना चाहिए। इसी प्रकार यदि अग्नि तत्त्व है तो अग्नि सूचक स्थानों के निकट जैसे रसोई घर, चिमनी, भट्ठी होगा। वायु तत्त्व राशि होने से आकाश की तरफ ऊँचे स्थान पर और जल तत्त्व होने से पानी के समीप स्थानों पर होगा। (प्रश्न तंत्र)

7) इसी प्रकार चतुर्थेश या 4 भाव में स्थित ग्रह के कारकत्त्व अनुसार भी नष्ट वस्तु के स्थान का विचार करना चाहिए।

यदि चतुर्थेश या 4 भाव में शनि स्थित हो तो वस्तु का स्थान मलिन जगहों शौचालय आदि होगा।

चंद्रमा से – जलीय स्थान, बाथरूम आदि
बृहस्पति हो तो – पवित्र स्थान, मंदिर आदि
मंगल हो तो – अग्नि के समीप
सूर्य हो तो – घर के मालिक के बैठने के आसन के समीप या उसके पास
शुक्र हो तो – पलंग या बैडरूम में
बुध हो तो – Library, धन, अन्न या यान के समीप होगा ऐसा कहना चाहिए।

G) चोर कौन है घर का या बाहर का :-

1) यदि प्रश्न लग्न में स्थिर लग्न तथा स्थिर नवांश उदय हो या वर्गोत्तम नवांश आए तो वस्तु उसी जगह पर स्थिर रहती है और

घर के किसी सदस्य द्वारा चुराई जाती है (षट्पंचाशिका)

2) यदि प्रश्न लग्न में चर राशि तथा चर नवांश उदय होता है तो वस्तु घटना स्थल से दूर चली जाती है तथा उसे चुराने वाला भी अपरिचित व्यक्ति होता है। (षट्पंचाश्का)

3) यदि लग्न में द्विस्वभाव राशि उदय हो तो वस्तु पड़ोसी ने चुराई है या किसी परिचित व्यक्ति ने चुराई है ऐसा कहना चाहिए। (दैवज्ञ वल्लभा, प्रश्न ज्ञान)

4) यदि प्रश्न लग्न पर सूर्य चंद्रमा की दृष्टि हो तो घर का सदस्य ही चोर होता है। यदि केवल सूर्य या चंद्रमा की लग्न पर दृष्टि हो तो पड़ोसी चोर होता है। (प्रश्न तंत्र)

5) यदि लग्नेश और सप्तमेश लग्न में स्थित हो तो भी घर का ही सदस्य चोर होता है।

6) यदि सप्तमेश तीसरे (3rd) या बाहरवें (12th) भाव में हो तो अपना नौकर चोर होता है। (प्रश्न तंत्र)

7) यदि सप्तमेश उच्च राशि का या स्वगृही हो तो चोर एक प्रसिद्ध व्यक्ति होता है। और जो ग्रह लग्न, सप्तम और दशम में स्थित होकर सबसे बली हो, उस ग्रह की जाति, वर्ण और गुण वाला व्यक्ति चोर का सहायक होता है। (प्रश्न तंत्र)

8) यदि सप्तमेश होकर सूर्य नीच हो तो पिता चोर होता है। इसी प्रकार नीचगत चंद्रमा से माता, शुक्र नीच होने से स्त्री, शनि नीच होने पुत्र ने, बृहस्पति नीचगत होने से भाई या पुत्र ने चोरी की है।

नीच के बुध से कोई रिश्तेदार या मित्र चोर होता है।

उपरोक्त योगों के साथ पुण्य का विचार भी आवश्यक है। (प्रश्न तंत्र)

9) यदि सप्तमेश और मंगल इशराफ योग में हो तो चोर पहले भी अपराध कर चुका है ऐसा समझना चाहिए। (प्रश्न तंत्र)

10) यदि सप्तमेश होकर शनि, चंद्रमा से दृष्ट है तो चोर बहुत चतुर और पाखंडी होता है। (प्रश्न ज्ञान)

11) सप्तमेश या सप्तम भाव में स्थित ग्रह द्वारा चोर का ज्ञान :- सप्तमेश सूर्य हो या सप्तम में स्थित हो - घर का बड़ा बुजुर्ग या सम्मानित व्यक्ति चोर होता है।

चंद्रमा सप्तमेश हो या सप्तम में स्थित हो - कोई चेचक, तिल या मस्से का मुख पर चिन्ह वाली स्त्री चोर होती है।

मंगल सप्तमेश हो या सप्तम में स्थित हो - तो भाई, मित्र या अन्य साहसी एवं परिचित व्यक्ति जो शरीर से हृष्ट-पुष्ट और रोबीला हो।

बुध सप्तमेश हो या सप्तम में स्थित हो - तो पुत्र, पुत्री, छोटा भाई या अन्य बालक चोर होता है। वह स्वभाव से चपल और विनोदी होता है।

गुरू सप्तमेश हो या सप्तम में स्थित हो - तो पुरोहित, अफसर, शिक्षक या अन्य कोई प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा और वह किसी के माध्यम से चोरी करवाता है।

शुक्र सप्तमेश हो या सप्तम में स्थित हो - तो पढ़ा-लिखा, फैशनेबल और आकर्षक वेशभूषा वाला युवक या युवती।

शनि सप्तमेश हो या सप्तम में स्थित हो - तो नीच जाति का नौकर या सेवक। उसका रंग काला, कद लम्बा और शरीर दुबला होता है।

रा० सप्तम में हो - तो चोर पेशेवर होता है वह नगर के बाहर रहने वाला, नीच जाति और दाढ़ी, मूंछ या केशधारी होता है।

के० सप्तम में हो - तो चोर कुख्यात होता है वह अपने सहयोगी के साथ योजनाबद्ध तरीके से चोरी करता है और चालाक होने के कारण आसानी से पकड़ा नहीं जाता।

H) चोरी का सामान मिलने के योग :-

1) यदि प्रश्न लग्न में पूर्ण चंद्रमा स्थित हो तब नष्ट वस्तु या चोरी गई वस्तु अवश्य मिल जाती है।

2) लग्न में शुभ ग्रह की स्थिति होने पर भी नष्ट वस्तु की प्राप्ति होती है।

3) यदि शीर्षोदय लग्नों पर शुभ दृष्टि हो तब भी नष्ट वस्तु अवश्य मिल जाती है।

4) यदि एकादश भाव में शुभ ग्रह बलवान होकर बैठे तब शीघ्र ही नष्ट द्रव्य या चोरी गई वस्तु का लाभ होता है। (षट्पंचाशिका/दैवज्ञ वल्लभा)

5) धन स्थान में शुक्र, व्यय स्थान में गुरू या लग्न में शुभ ग्रह होने पर चोरी का सामान मिल जाता है। लग्न में चंद्रमा हो तो लग्न की राशि की दिशा में और लग्न में सूर्य हो तो लग्नेश की दिशा में मिलता है। (दैवज्ञ वल्लभा)

6) लग्न से 2, 3 भावों में या 4H में शुभ ग्रह हो तो निश्चित रूप से चोरी का सामान मिलता है।

7) इसी प्रकार लग्न से 4, 7 और 10 भावों (केन्द्रों में) में शुभ ग्रह होने पर भी निश्चित रूप से चोरी का सामान मिलता है। (दैवज्ञ वल्लभा)

8) लग्न में स्थित पूर्ण चंद्रमा पर गुरू या शुक्र की दृष्टि हो या केन्द्र एवं उपचय स्थानों में शुभ ग्रह हो (1/3/4/6/7/10/11) या द्वितीय एवं उपचय स्थानों में शुभ ग्रह हों तो चोरी गया सामान अवश्य मिल जाता है। (2/3/6/10/11) (दैवज्ञ वल्लभा)

9) प्रश्न लग्न में पूर्ण चंद्रमा, गुरू, शुक्र या बुध हो तो चोरी का सामान अवश्य मिलता है। इसी प्रकार यदि सप्तम स्थान में शुभ ग्रह हों तो भी चोरी का सामान शीघ्र मिलता है। (अर्थात् प्रश्न लग्न बलवान होना चाहिए चाहे शुभ ग्रहों की स्थिति से हो या दृष्टि से) (दैवज्ञ वल्लभा)

10) यदि लग्न से या चतुर्थ भाव से द्वितीय या तृतीय स्थान में शुभ ग्रह हो तो नष्ट सामान मिल जाता है।

(लग्न से 2/3 भाव - शुभ ग्रह
4H से 2/3 भाव - 5H/6H - शुभ ग्रह) (दैवज्ञ वल्लभा)

11) लग्न में शुभ ग्रह की राशि शुभ ग्रहों से दृष्ट होने पर नष्ट पदार्थ मिल जाता है। (दैवज्ञ वल्लभा)

12) प्रश्न कुण्डली में यदि चंद्रमा का राशि स्वामी (disposition of moon) चंद्रमा को पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो नष्ट वस्तु का लाभ

अवश्य होता है। (प्रश्न चंडेश्वर)

13) लग्नेश और सप्तमेश का 7 भाव में इत्थशाल होने पर नष्ट धन प्राप्ति होती है। (प्रश्न तंत्र)

14) लग्नेश और दशमेश के इत्थशाल होने से पुलिस की सहायता से चोरी का माल उपलब्ध होता है। (प्रश्न तंत्र)

15) यदि तृतीयेश (3rd) या नवमेश का सप्तमेश से इत्थशाल हो तो दूसरे शहर में चोरी का सामान उपलब्ध होता है। (प्रश्न तंत्र)

16) यदि चं० का शुभ ग्रहों से लग्न या दशम भाव में इत्थशाल हो तो चोरी गए सामान की प्राप्ति होती है। (प्रश्न तंत्र)

17) यदि लग्न में स्थित चं० को सूर्य या शुभ ग्रह मित्र दृष्टि से देखते हों तो भी नष्ट धन की प्राप्ति होती है।

18) लग्नेश और सप्तमेश का इत्थशाल होने से चोरी के धन की प्राप्ति होती है। (प्रश्न तंत्र)

19) यदि अष्टमेश, लग्न में हो तो चोर स्वयं चोरी के धन को लौटा देता है। (प्रश्न तंत्र)

20) यदि लग्नेश और सप्तमेश में इत्थशाल न हो, और लग्नेश दुर्बल हो तो, चोर चोरी का धन पुलिस/न्यायालय में दे जाता है (परन्तु लग्नेश दुर्बल होने वह प्रश्नकर्त्ता को प्राप्त नहीं होता) (प्रश्न तंत्र)

21) धनेश और अष्टमेश के इत्थशाल होने से चोरी गए धन की प्राप्ति होती है।

22) लग्नेश और सप्तमेश यदि लग्न में, धन भाव में या एकादश स्थान में हो तो नष्ट धन की प्राप्ति होती है। (प्रश्न ज्ञान)

23) धनेश और चंद्रमा में इत्थशाल हो तो भी प्राप्ति होगी।

24) लग्नेश के साथ चंद्रमा का इत्थशाल हो तो कुछ धन मिल जाता है। (प्रश्न ज्ञान)

25) लग्न और चं० को शुभ ग्रह देखते हों।

26) सूर्य और चंद्रमा दोनों लग्न को देखते हों तो कुछ सामान मिलता है।

27) शुभ ग्रहों का चंद्रमा से इत्थशाल हो और चंद्रमा लग्न या धन भाव में हो। (प्रश्न ज्ञान)

28) जिस दिन वस्तु खोई हो, उस दिन तथा समय पर देखें कि चंद्रमा किस नक्षत्र में है, फिर उसके अनुसार फल बताएँ। अभिजित सहित कुल 28 नक्षत्रों को चार वर्गों में बाँटा गया है अन्धलोचन नक्षत्र, मन्दलोचन नक्षत्र, मध्य लोचन तथा सुलोचन नक्षत्र। नक्षत्र का वर्गीकरण रोहिणी से शुरू किया जाता है। पहला नक्षत्र रोहिणी अन्ध नक्षत्रों में, दूसरा मृगशिरा मन्द नक्षत्रों में, तीसरा आर्द्रा मध्य नक्षत्रों में तथा अगला पुनर्वसु सुलोचन नक्षत्रों में वर्गीकृत किया जाता है। उसके बाद भी क्रमशः यही क्रम चलता रहता है।

अन्ध लोचन में नष्ट हुई वस्तु का - शीघ्र लाभ होता है।

मन्द लोचन में नष्ट हुई वस्तु का - प्रयास करने पर लाभ होता है।

मध्य लोचन में नष्ट हुई वस्तु का - के बारे में सुनाई तो पड़ता है पर प्राप्त नहीं होती।

सुलोचन लोचन में नष्ट हुई वस्तु का - कभी नहीं मिलती और न सुनाई पड़ती है।

29) यदि लग्नेश और दशमेश की युति हो तो चोरी गया धन पुलिस की सहायता से प्राप्त होता है। (प्रश्न तंत्र)

चोरी का सामान न मिलने के योग

1) लग्न में पाप ग्रह की राशि पाप ग्रह से दृष्ट होने पर नष्ट पदार्थ नहीं मिलता। (दैवज्ञ वल्लभा)

2) यदि 7 स्थान में सिंह, वृश्चिक या कुम्भ राशि में उनका की नवांश हो और उस पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो तो नष्ट द्रव्य नहीं मिलता।

3) यदि चतुर्थ भाव में पाप ग्रह हों तो नष्ट धन की प्राप्ति नहीं होती। (प्रश्न तंत्र)

4)सप्तम या अष्टम स्थान में मंगल होने से धन का स्थानांतरण हो जाने से उसकी प्राप्ति नहीं हो पाती।

5) यदि लग्न में राहू हो और सूर्य अष्टम भाव में हो तो भी नष्ट धन की प्राप्ति नहीं होती। (प्रश्न तंत्र)

6) यदि सूर्य लग्न में हो और चं० 7 भाव में हो तो नष्ट धन की प्राप्ति नहीं होती। (पूर्णिमा के दिन, सुबह के समय चोरी का प्रश्न हो) (प्रश्न तंत्र)

7) यदि धनेश सप्तम या अष्टम भाव में हो तो नष्ट धन की प्राप्ति नहीं होती। (प्रश्न तंत्र)

8) यदि लग्नेश और धनेश का कोई दृष्टि संबंध न हो तो नष्ट धन की खबर तो मिलती है पर प्राप्ति नहीं होती।

9) यदि दशमेश और अष्टमेश का इत्थशाल हो तो पुलिस चोर का पक्ष लेती है अतः खोए धन की प्राप्ति नहीं हो पाती। (प्रश्न तंत्र)

10) लग्नेश सप्तम में और सप्तमेश लग्न में वक्री हो तो चोरी गए धन की प्राप्ति नहीं होती (या यह कह सकते हैं कि सप्तमेश के लग्न में वक्रकी होने से बार-बार प्रयास से प्राप्ति होगी। (प्रश्न ज्ञान)

11) केन्द्र, त्रिकोण, अष्टम एवं द्वितीय स्थान में पाप ग्रह हो या दृष्टि हो तो नष्ट धन की प्राप्ति नहीं होती। (प्रश्न ज्ञान)

12) लग्नेश एवं लाभेश बलहीन हों तो भी नष्ट धन प्राप्ति नहीं होती। (प्रश्न ज्ञान)

चोर पकड़ा जाएगा या नहीं?

1) लग्नेश और दशमेश का इत्थशाल होने पर चोर धन सहित भाग जाता है। (प्रश्न तंत्र)

2) यदि चंद्रमा तथा सप्तमेश अस्त हो तो चोर धन सहित पकड़ा जाता है।

3) यदि सप्तमेश केन्द्र स्थानों में हो तो चोर उसी जगह या शहर पर रहता है। केन्द्रों से अन्य स्थान पर होने से चोर दूसरी जगह पर भाग जाता है।

4) यदि सप्तमेश का तृतीयेश या नवमेश से इत्थशाल हो तो चोर भाग जाता है।

5) लग्नेश दशमेश का इत्थशाल होने से चोर धन सहित पकड़ा जाता है।

6) यदि धनेश अस्त हो तो भी चोर पकड़ा जाता है।
7) यदि सप्तमेश अस्त हो तो भी चोर पकड़ा जाता है। (प्रश्न ज्ञान)
8) सप्तमेश और मंगल का ईशरफ होने से चोर पकड़ा जाता है। (प्रश्न ज्ञान)
9) सप्तमेश को शनि एवं चंद्रमा देखते हों तो चोर चालाकी के कारण पकड़ में नहीं आता।
10) लग्नेश और धनेश पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो चोर को पुलिस पकड़ लेती है।
11) नवमेश और तृतीयेश में इत्थशाल हो तथा धनेश की दृष्टि हो तो चोर विदेश चले जाने के कारण पकड़ा नहीं जाता।
12) सप्तम में पाप ग्रह हो तथा दशमेश मंगल से दृष्ट हो तो चोर को पुलिस पकड़ लेती है तथा अच्छे। पिटाई होने पर अपना अपराध स्वीकार कर लेता है।
13) लग्नेश लग्न में या लग्नेश और सप्तमेश दोनों चतुर्थ स्थान में हो तो चोर कभी भी पकड़ में नहीं आता।
14) सप्तमेश अष्टम में और अष्टमेश सप्तम स्थान में हो तो चोरों के गिरोह में फूट पड़ जाने से वो सब धीरे-2 पकड़ में आ जाते हैं।
15) सप्तमेश को बुध और चंद्रमा देखते हो तो चोर ठग एवं धूर्त होता है, उसका पता लग जाने पर भी वह पकड़ में नहीं आता।
16) पंचमेश और दशमेश इन दोनों को गुरू, शुक्र या कोई और शुभ ग्रह देखते हों तो चोर पुलिस के जाल में फंस कर पकड़ा जाता है।
17) सप्तमेश केन्द्र स्थान में सूर्य के साथ अस्त हो तो चोर मर जाता है।

चोर पुरूष या स्त्री

यदि सप्तमेश स्त्री ग्रह हो या स्त्री ग्रह की राशि में हो या स्त्री ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो चोर स्त्री है अन्यथा विषम राशि में स्थित और पुरूष ग्रहों से दृष्ट होने पर चोर पुरूष होता है। (प्रश्न तंत्र)

यह व्यक्ति चोर है या नहीं?

यदि संदिग्ध व्यक्ति के बारे में प्रश्न हो कि वह चोर है या नहीं? तो

प्रश्न लग्न में चंद्रमा यदि पाप ग्रहों से इत्थशाल करें तो संदिग्ध व्यक्ति हो चोर होता है और यदि चंद्रमा का शुभ ग्रहों के साथ इत्थशाल हो तो वह व्यक्ति चोर सिद्ध नहीं होता। (प्रश्न तंत्र)

क्या इस व्यक्ति ने पहले भी कभी चोरी की है?

यदि संदिग्ध व्यक्ति के बारे में प्रश्न किया जाए कि उसने पहले भी कभी चोरी की है या नहीं? तो यदि प्रश्न लग्न के लग्नेश या चंद्रमा का सप्तमेश से इशराफ योग हो तो चोर ने पहले भी चोरी की है।

लग्न राशि के अनुसार चोरी गए सामान की स्थिति जानना

1) यदि प्रश्न लग्न में मेष राशि हो तो चोरी गया सामान भूमिगत होगा या भेड़-बकरियों के चरने के स्थान पर छिपाया होगा।
2) वृषभ राशि हो - गौशाला में
3) मिथुन राशि - नाटक घर, शयन कक्ष, नृत्य या संगीत या मनोरंजन के स्थान पर
4) कर्क राशि - जलीय स्थानों के समीप
5) सिंह राशि - घना जंगल या शून्य स्थान
6) कन्या राशि - हरे भरे मैदान में, नौका या जहाज के समीप
7) तुला राशि - दुकान, गोदाम या बाज़ार में
8) वृश्चिक राशि - किसी पात्र में जमीन में गाड़ दिया
9) धनु राशि - जंगल में या अश्वशाला में या शस्त्रों के समीप
10) मकर राशि - जलाशय के निकट
11) कुम्भ राशि - प्याऊ में, कुम्हार के स्थान पर
12) मीन राशि - मन्दिर, कुआँ, या तालाब के समीप छिपाया होता है। (प्रश्न ज्ञान)